अध्याय 01 : आधुनिक भारत का इतिहास लेखन
Chapter 01 : Historiography of Indian Nationalism

1) इतिहास का विभाजन (Division of History)

2) इतिहास में समयरेखा (Time)

3) भारतीय इतिहास (Indian History)

5) आधुनिक भारत का इतिहास लेखन (Historiography of Indian Nationalism)

4) उपनिवेशवाद (Colonialism)

History | इतिहास

- **History is the study of past in present for the better future** | वर्तमान और भविष्य के प्रकाश में अतीत की महत्वपूर्ण घटनाओ का अध्ययन

Etymology | शब्द-व्युपत्ति

इतिहास → History

↓ Origin

Greek Word (ग्रीक शब्द)

↓

Historia → Inquiry / Research | अनुसंधान

History : Development as subject | इतिहास: विषय के रूप में विकास

484 BC → Greek → Herodotus | हेरोडोटस

यूनान

↓

Book - The Histories | हिस्टोरिका → यूनान फारस युद्ध | Greco-Persian Wars.

→ क्रमबद्ध तरीके से इतिहास लेखन

↓

Father of History | इतिहास का पिता

411 BC → Greek → Thucydides | थ्यूसीदाइदीज

यूनान

↓

Book - 'पेलोपोनेशियाई युद्ध का इतिहास'

History of the Peloponnesian War → स्पार्टा और एथेंस के बीच युद्ध

→ विश्लेषण तरीके से इतिहास लेखन

↓

Father of Scientific History | वैज्ञानिक इतिहास के पिता

1.1) Division of History

Pre-Historic Period : It is the period of human culture for which no written records are available. The history of this period is studied by archaeological evidences only. This period is divided into three parts viz. Palaeolithic Age, Mesolithic Age and Neolithic Age.

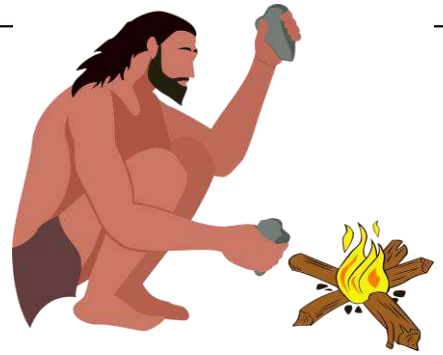

Proto-history Period : Protohistory is the period between prehistoric and modern history. Protohistoric period has a record of writings but it is not understood by the succeeding ages. Duration of this period is 2500 BC to 600 BC.

Historical Period : It is the period whose information is available in written records. Historical activities after 600 BC included in this period.

1.1) इतिहास का विभाजन

प्रागैतिहासिक काल : यह मानव संस्कृति का काल है जिसका कोई लिखित अभिलेख उपलब्ध नहीं है। इस काल के इतिहास का अध्ययन पुरातात्विक साक्ष्यों से ही किया जाता है। इस काल को तीन भागों में विभाजित किया गया है। पुरापाषाण युग, मध्यपाषाण युग और नवपाषाण युग।

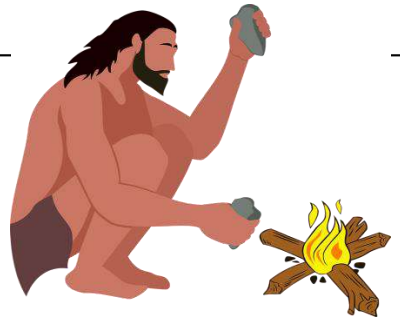

आद्य-इतिहास काल : आद्य इतिहास प्रागैतिहासिक और आधुनिक इतिहास के बीच का काल है। आद्य-ऐतिहासिक काल में लेखों का रिकॉर्ड मौजूद है लेकिन बाद के युगों द्वारा इसे समझा नहीं जा सका। इस काल की अवधि 2500 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व है।

ऐतिहासिक काल : यह वह काल है जिसकी जानकारी लिखित अभिलेखों में उपलब्ध है। इस काल में 600 ईसा पूर्व के बाद की ऐतिहासिक गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।

1.2) Timeline in History

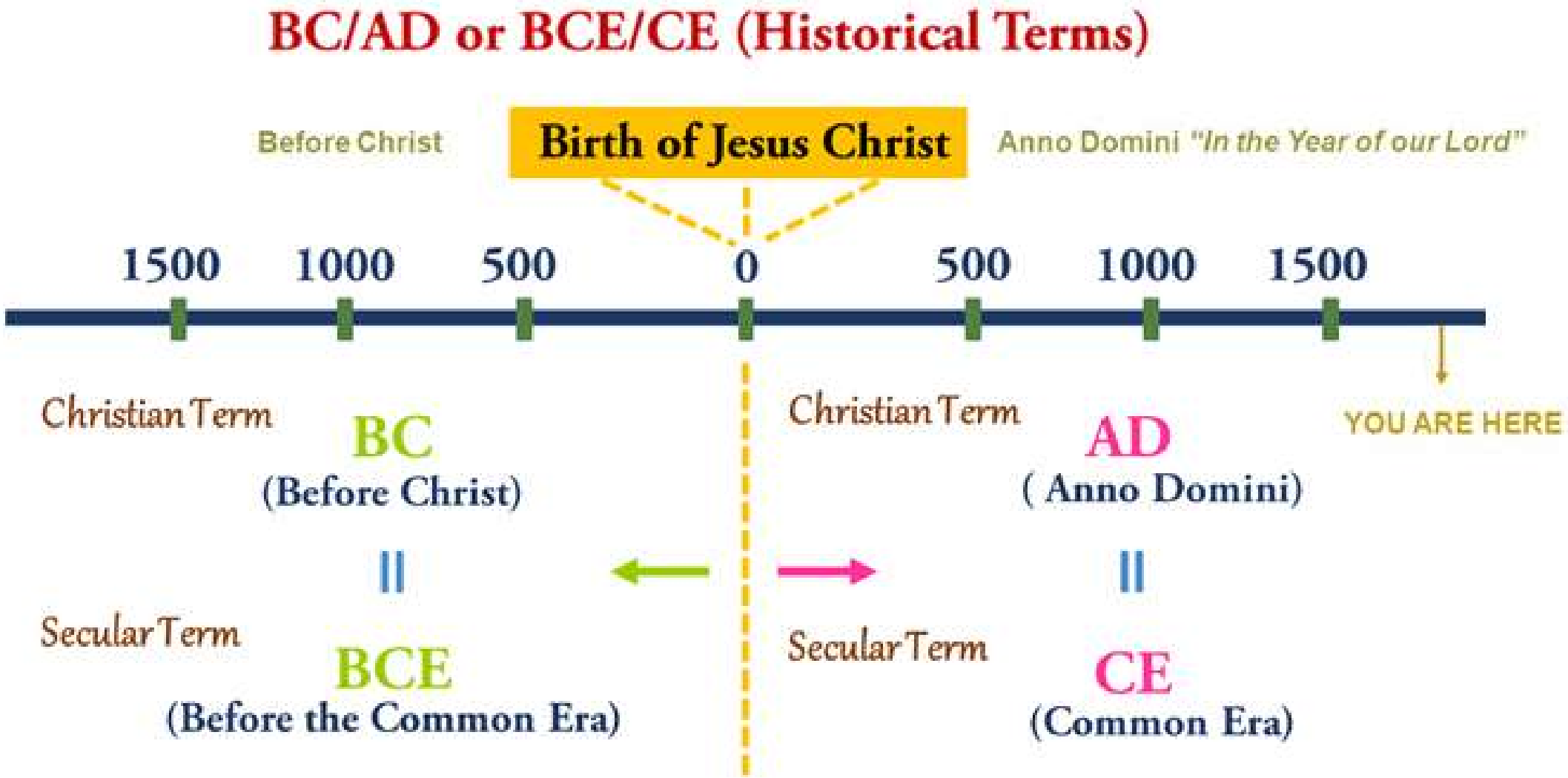

1.2) इतिहास में समयरेखा

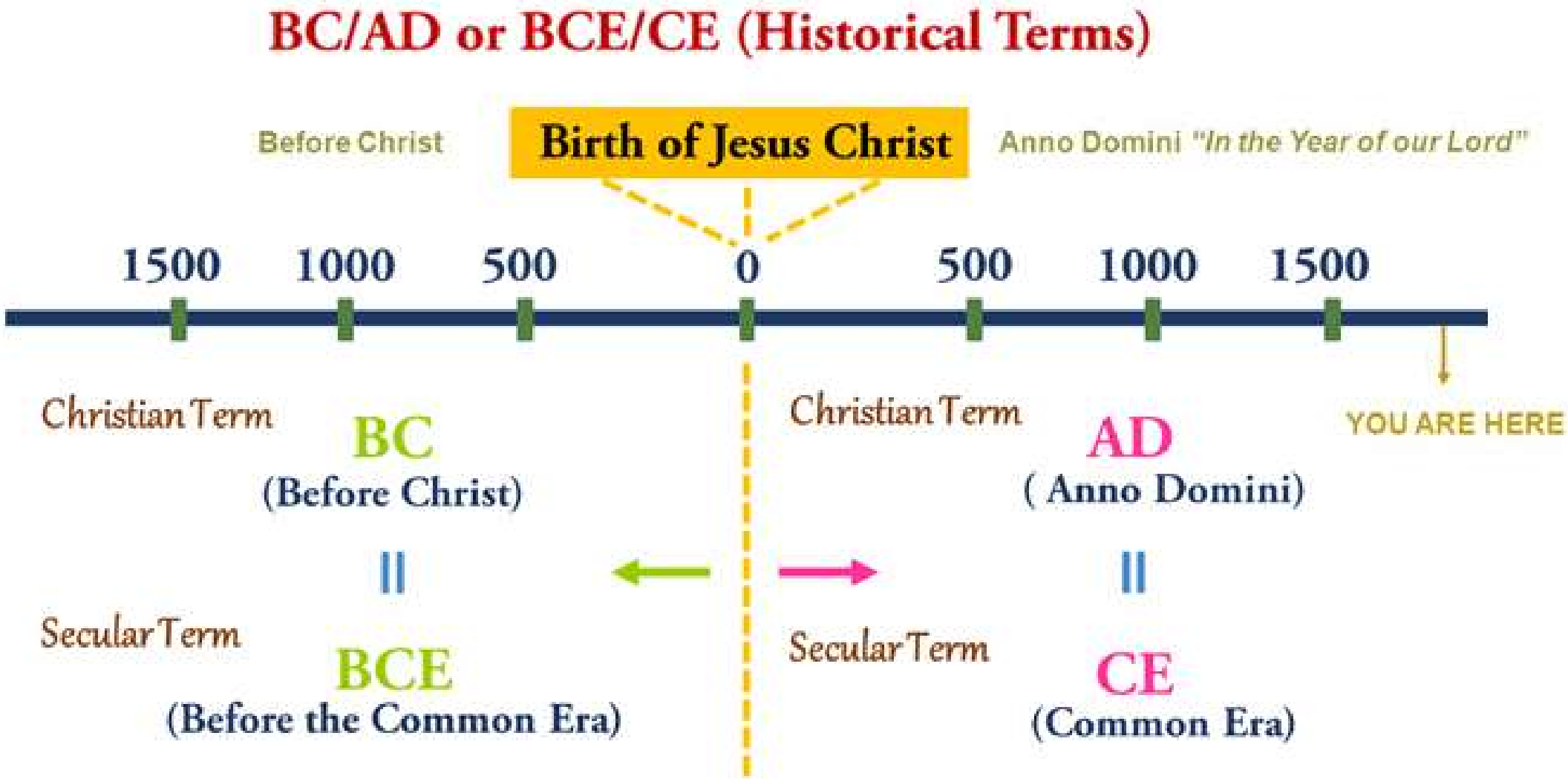

1.3) भारतीय इतिहास

- प्राचीन भारतीय इतिहास (प्रागैतिहासिक काल - 712AD)
- मध्यकालीन भारतीय इतिहास (712 AD – 1707 AD)
- आधुनिक भारतीय इतिहास (1707 AD – 1950 AD)
  - 1) यूरोपीय कंपनियों का आगमन तथा विस्तार
  - 2) ब्रिटिश नीतियों तथा आरंभिक विद्रोह
  - 3) समाज सुधार आंदोलन
  - 4) भारतीय राष्ट्रवाद का उदय
  - 5) भारत में गांधीवादी आंदोलन
  - 6) भारत में क्रांतिकारी आंदोलन
  - 7) भारत की स्वतंत्रता और पुनर्गठन

1.4) उपनिवेशवाद (Colonialism)

1) **उपनिवेशवाद (Colonialism) :-** किसी एक राष्ट्र के द्वारा दूसरे राष्ट्र पर आर्थिक विदोहन हेतु अधिकार करना (Captures someone else's territory not to merge it an form one larger entity but to have the captured territory as a separate entity called a colony and be exploited for economic and commercial purposes)

   - **उपनिवेशवाद मूलतः एक आर्थिक संबंध होता है किंतु इसके राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव भी होते हैं (Colonialism is basically an economic relationship but it also has political, social and cultural effects)**

2) **नव उपनिवेदशवाद (Neo-colonialism) :-** विकसित देश अपने राष्ट्रीय हितों हेतु विकासशील देशों के आंतरिक मामलों में प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप (Developed countries direct / indirect intervention in internal affairs of developing countries for their national interests)

1) आंग्ल फ्रांसीसी संघर्ष || Anglo French conflict
2) प्लासी, बक्सर, मैसूर || Plassey, Buxar, Mysore
3) सहायक संधि || Subsidiary Alliance
4) व्यपगत सिद्धांत || Doctrine of Lapse

4. साम्राज्यवाद || Imperialism

भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद (British colonialism in India)

3. संस्कृति व शिक्षा || Culture & education

1) हस्तक्षेप व कानून || Intervention and law
2) अंग्रेजी शिक्षा || English education
3) मिशनरी || Missionary

2. विकास || Development

1) रेल || Rail
2) सड़क || Road
3) प्रशासन || Administration

1. आर्थिक शोषण || Economic exploitation

1) निर्मित वस्तुएं – निर्यात || Final Goods - Export
2) कच्चे माल – निर्यात || Raw Materials - Export
3) पारम्परिक उद्योग – अवरुद्ध || Traditional Industry - Blocked

1.5) आधुनिक भारत का इतिहास लेखन (Historiography of Indian Nationalism)

- साम्राज्यवादी / कैम्ब्रिज उपागम
- राष्ट्रवादी उपागम
- मार्क्सवादी उपागम
- सबाल्टर्न या उपाश्रयवादी उपागम

1) साम्राज्यवादी उपागम (कैम्ब्रिज उपागम) :-

- **प्रमुख इतिहासकार -** कूपलैण्ड, पर्सिवल स्पीयर, अनिल सील, जुडिथ ब्राउन।
- भारत को अवरुद्ध एवं पिछड़े समाज के रूप में चित्रित किया
- ब्रिटेन को गौरवशाली रूप में प्रस्तुत किया
- ब्रिटेन द्वारा किये गए भारत के औपनिवेशकरण को उचित ठहराया
- भारत एक राष्ट्र नहीं वरन एक भौगोलिक इकाई मात्र था
- इनके अनुसार राष्ट्रीय आंदोलन एक अभिजात गुट का दूसरे अभिजात गुट के विरुद्ध संघर्ष था। जिसमें स्थानीय, प्रांतीय व अखिल भारतीय स्तर पर नेता रूपी दलाल थे

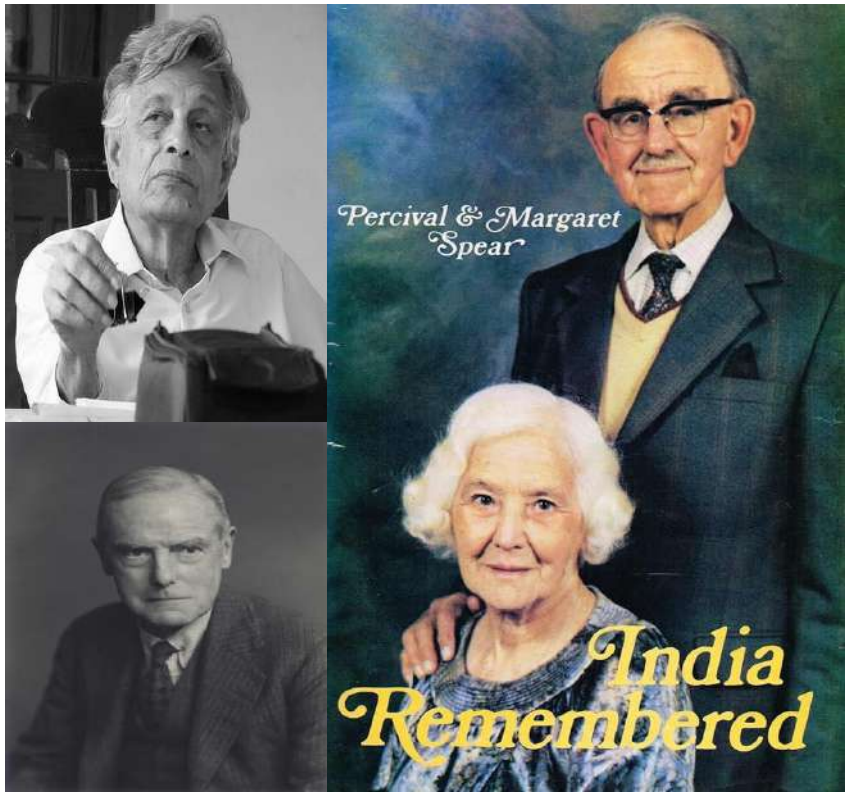

1.5) Historiography of Indian Nationalism

- Imperialist/ Cambridge
- Nationalist approach
- Marxist approach
- Subaltern approach

1) Imperialist approach (cambridge approach) :-

- **Leading historian -** Coupland, Percival spear, Anil seal, Judith brown.
- Portrayed India as a backward and backward society.
- Presented Britain in a glorious light
- Justified the colonization of India by Britain
- India was not a nation but only a geographical unit.
- According to him, the national movement was a struggle of one elite group against another elite group. In which there were brokers in the form of leaders at local, provincial and all india level.

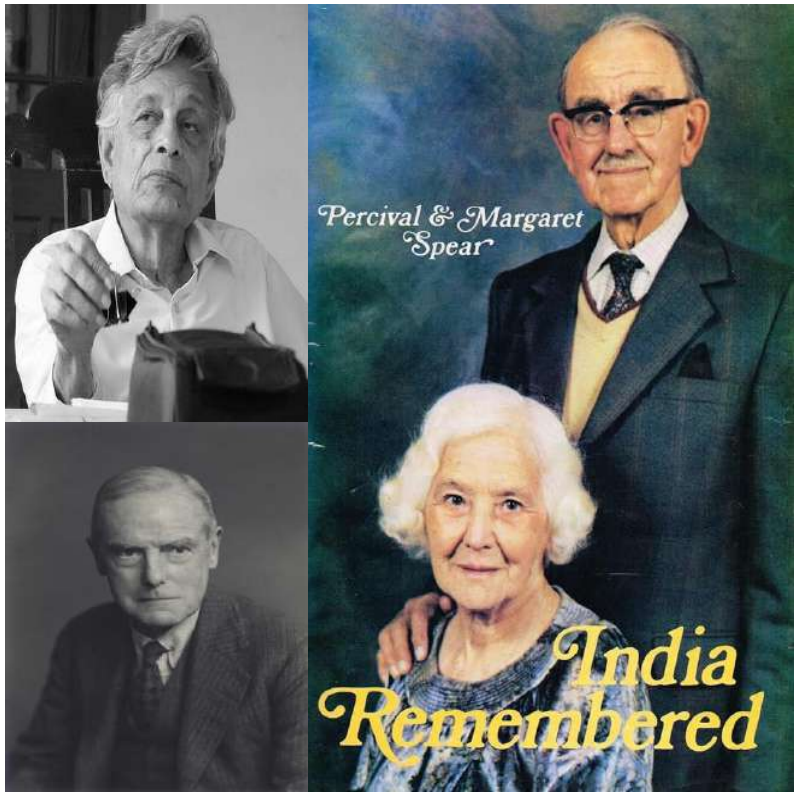

2) राष्ट्रवादी उपागम :-

- **इतिहासकार -** लाला लाजपत राय, रमेश चंद्र मजूमदार, बाल गंगाधर तिलक, सुरेंद्र नाथ बनर्जी, दयानंद सरस्वती, तारा चंद, बल राम नंदा
- ब्रिटिश उपनिवेशवाद के शोषक तत्वों को उजागर किया
- राष्ट्रीय आंदोलन, औपनिवेशिक शासन का परिणाम
- **कमी -** उनके अनुसार राष्ट्रीय आंदोलन, सभी भारतीयो के हितों का समान रूप से प्रतिनिधित्व करता है
- **परिणाम -** भारत में राष्ट्रवाद का विकास

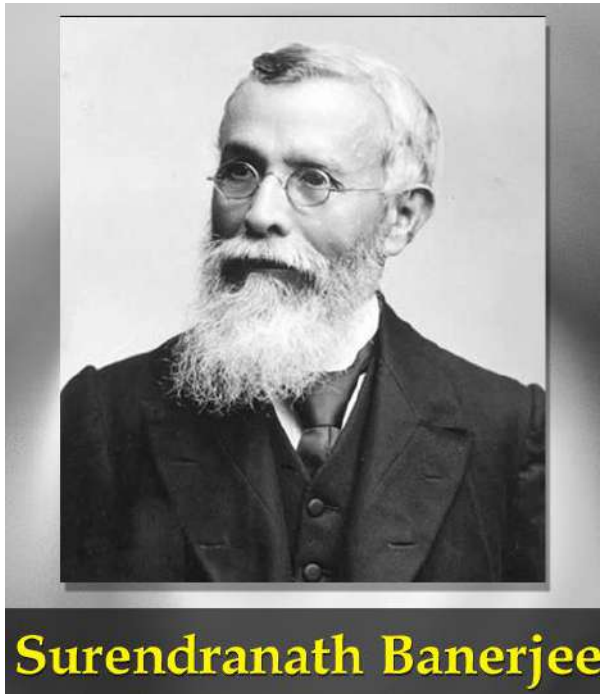

2) Nationalist approach :-

- **Historian -** lala lajpat rai, ramesh chandra majumdar, bal gangadhar tilak, surendra nath banerjee, dayanand saraswati, tara chand, bal ram nanda
- Exposed the exploitative elements of british colonialism
- National movement, result of colonial rule
- **Shortcoming –** according to him, the national movement represents the interests of all indians equally.
- **Result –** development of nationalism in india

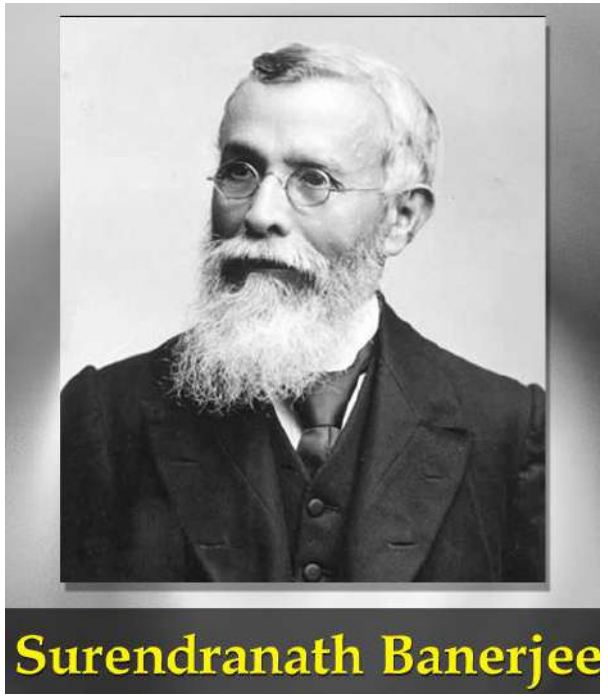

3) मार्क्सवादी उपागम :-

- **इतिहासकार -** रजनी पाम दत्त, अक्षय रमणलाल देसाई, प्रोफेसर बिपिन चन्द्र, मानवेन्द्रनाथ राय आदि
- भारतीय इतिहास की सामाजिक व वर्गीय व्याख्या प्रस्तुत की
- आरंभिक मार्क्सवादी इतिहासकार जैसे रजनी पाल्मे दत्त ने राष्ट्रीय आंदोलन को सामाजिक संघर्ष माना
  - उनके अनुसार, राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व बुर्जुआ वर्ग ने अपने संकीर्ण हितों को पूरा करने हेतु किया, जबकि कृषक, मजदूर व अन्य बड़े समूहों के हितों की अनदेखी हुई
- हालांकि कालांतर में विपिन चन्द्र जैसे इतिहासकारों ने एक बेहतर व संतुलित दृष्टिकोण अपनाया।
  - विपिनचन्द्र के अनुसार भारत में दो विरोधाभास थे **- प्राथमिक व द्वितीयक**
    - प्राथमिक - भारतीय जनमानस व ब्रिटिश शासन के मध्य
    - द्वितीयक - भारतीय जनमानस के मध्य
  - विपिन चन्द्र के अनुसार, द्वितीय विरोधाभास कमजोर हो गया तथा प्राथमिक विरोधाभास मजबूत होता गया, जिसका परिणाम भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन था

3) Marxist approach :-

- **Historian -** rajni pam dutt, akshay ramanlal desai, professor bipin chandra, manvendranath rai etc.
- Presented social and class interpretation of indian history
- Early marxist historians like rajni palme dutt considered the national movement as a social struggle.
  - According to him, the national movement was led by the bourgeoisie to fulfill its narrow interests, while the interests of farmers, laborers and other large groups were ignored.
- However, with time, historians like vipin chandra adopted a better and balanced approach.
  - ❑ According to vipinchandra, there were two contradictions in india – **primary and secondary**.
    - ⊙ Primary – between the indian people and the british rule
    - ⊙ Secondary – among the indian public
  - ❑ According to vipin chandra, the secondary contradiction weakened and the primary contradiction became stronger, the result of which was the indian national movement.

4) सबाल्टर्न या उपाश्रयवादी उपागम :-

- उपाश्रयवादी उपागम के संस्थापक रंजीत गुहा को माना जाता है
- 1980 में स्थापित इस दृष्टिकोण को पार्थ चटर्जी, ज्ञानेंद्र पांडेय, रितु मेनन आदि ने आगे बढ़ाया
- **विशेषताएँ -**
  - इस दृष्टिकोण के अनुसार चाहे वो साम्राज्यवादी इतिहास लेखन हो अथवा मार्क्सवादी या राष्ट्रवादी इतिहासलेखन, सभी एक समान दोष के शिकार हैं। ये सभी दृष्टिकोण राष्ट्रीय आंदोलन में नेताओं की भूमिका को अधिक करके दर्शाते हैं जबकि किसी भी आंदोलन में जनसामान्य नेतृत्व को दिशा देता न कि नेतृत्व जनसामान्य को।
  - इन्होंने इतिहास के विश्लेषण में नेतृत्व की भूमिका की जगह सामाजिक प्रक्रिया पर अधिक बल दिया है।
- **परिणाम -** इस दृष्टिकोण ने जनजाति और किसान आंदोलन के अध्ययन में विशेष योगदान दिया है तथा प्रत्येक आंदोलन में निचले स्तर के दबाव को दर्शाने का प्रयास किया है।

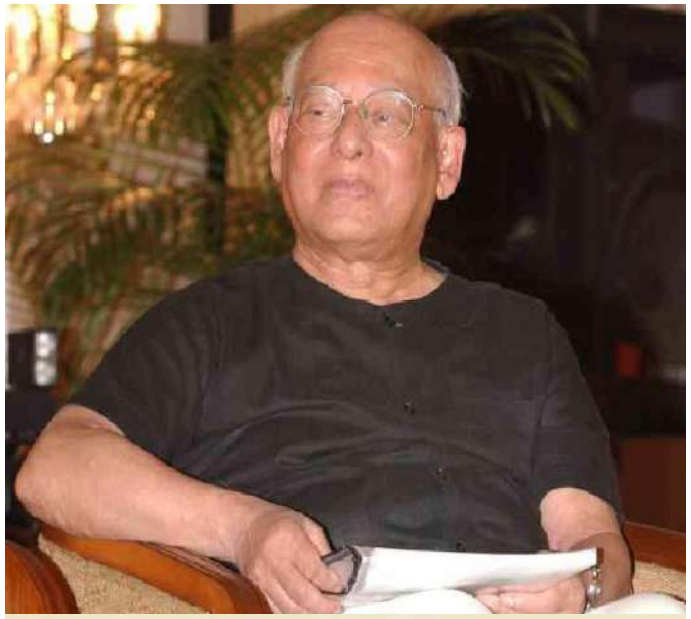

4) Subaltern approach :-

- Ranjit guha is considered to be the founder of the sub-dependent approach.
- This approach established in 1980 was carried forward by partha chatterjee, gyanendra pandey, ritu menon etc.
- **Features -**
  - According to this point of view, whether it is imperialist historiography or marxist or nationalist historiography, all are victims of the same flaw. All these viewpoints exaggerate the role of leaders in the national movement whereas in any movement the masses give direction to the leadership and not the leadership to the masses.
  - In the analysis of history, he has given more emphasis on social process rather than the role of leadership.
- **Result -** this approach has made a special contribution to the study of tribal and peasant movements and has tried to show the pressure at the grassroots level in each movement.